# भविष्य पुराण में सूर्य के स्वरूप की महत्ता

*डॉ. छगनलाल महोलिया

**प्रस्तावना –**

सूर्य के स्वरूप का सुस्पष्ट विवेचन भविष्यपुराण के ब्राह्मपर्वस्थ 66 एवं 67वें अध्यायों में मिलता है। इसके मुख्य वक्ता ब्रह्मा हैं और श्रोता याज्ञवलक्य। इसमें सूर्य को सर्वदेवात्मक, सम्पूर्ण विश्व का साक्षी, स्वामी, काल का प्रवर्तक, धाता, विधाता, पोषक, आप्यायक, देवताओं के भी देवता, पितरों के भी पितर, सम्पूर्ण जगत् के आधार, प्रकाश, ऊष्मा आदि का उत्पत्ति–स्थान, वायु, आकाश आदि का कारण, योगियों के द्वारा परम प्राप्य, वालखिल्य, व्यास, पंचशिख, शुकदेव आदि के प्रवेश–स्थान के रूप में निर्दिष्ट किया गया है। इन महात्माओं ने सूर्यकिरण का पान कर, योगधर्म को प्राप्त कर मोक्ष को प्राप्त किया था।[1] अन्य देवता शब्दों से ज्ञेय और केवल कानों को ही सुख देने वाले हैं। प्रत्यक्ष दीखने वाले देवता तो सूर्य ही हैं।[2] ये बातें प्रायः वाल्मीकिरामायण युद्धकाण्ड के 108वें अध्याय में तथा सांबपुराण के दूसरे अध्यायों में भी इन्हीं श्लोकों में कही गयी है।

67वें अध्याय में केवल सूर्य के द्वारा आत्म–स्वरूप के विषय में ब्रह्मा का उपदेश दिया गया है। तदनुसार सूर्य ही विश्वव्यापी अन्तरात्मा है। यही सांख्ययोगियों के प्रधान, प्रकृति, क्षेत्रज्ञ, महत्तत्व एवं बुद्धितत्व है।[3] इनके हाथ, पैर, नेत्र, सिर, मुख, कान सभी स्थानों पर फैले हुए हैं और वह सम्पूर्ण विश्व को व्याप्त कर स्वर्ग में स्थित है।[4] सम्पूर्ण विश्व ही इनका क्षेत्र है। उसे ठीक–ठीक जानने से ही ये क्षेत्रज्ञ कहे जाते हैं। अव्यक्त मायामय शरीर में शयन करने से इन्हीं का नाम पुरुष है।[5] विश्व में विभिन्न रूपों में व्याप्त होने से ये विश्वरूप और सनातन महापुरुष कहे गये हैं। एक ही वायु जिस प्रकार शरीर में प्राण, अपान, उदान, व्यान आदि के रूप में विभक्त हैं और एक ही अग्नि स्थान–विशेष के कारण आहवनीय, स्थापनीय, जठराग्नि, वडवाग्नि रूप में विभक्त हैं। एक दीपक से जैसे हजारों दीपक जलाये जाते हैं, वैसे अकेले सूर्य ही विविध नक्षत्र, ज्योतिपुंज एवं जगत् में विविध जीवों के रूप में व्याप्त है। वे ही विश्व के बीज हैं। उन्हीं से त्रिगुणात्मक प्रकृति की उत्पत्ति होती है।[6] इनसे बढ़कर कोई अन्य देवता नहीं है। वे ही विश्व के पिता, प्रजापति एवं मेरी आत्मा है। अतएव मैं उन्हीं की आराधना करता हूं।[7]

सूर्य की उत्पत्ति के विषय में भविष्यपुराण के अतिरिक्त मार्कण्डेयपुराण, ब्रह्मपुराण, विष्णुपुराण आदि में विस्तृत वर्णन प्राप्त है। उन्हें सर्वत्र अदिति का पुत्र होने से आदित्य कहा गया है। उनके पिता कश्यप है। ब्रह्मपर्व के 158वें अध्याय में यह कथा है कि पहले अदिति के जो पुत्र होते थे, वे तत्काल ही नष्ट हो जाते थे। अदिति ने जाकर अपने पति कश्यप से दुःख के साथ कहा कि आप निरुद्योग होकर क्यों बैठे हैं ? क्या आपको ज्ञात नहीं है कि मेरे जो पुत्र उत्पन्न होते हैं, वे नष्ट हो जाते हैं ? इस पर कश्यपजी ब्रह्माजी के पास गये। ब्रह्माजी उन्हें लेकर सूर्यलोक में गये। उस समय सूर्य के लोक में सामवेदी लोग वेदों का पाठ कर रहे थे और कोयल तथा भ्रमर उस पाठ के साथ ध्वनि कर रहे थे। सभी वेदवादी, मीमांसक, पुराणज्ञ और लोकायतिक विद्वान् सूर्य की स्तुति कर रहे थे।[8] दक्ष, प्रचेता, पुलह, मरिचि, भृगु, अत्रि, बसिष्ठ, गोतम, नारद, अग्नि, वायु, अन्तरिक्ष, साङ्गोपाङ्ग वेद, ऋतु, मास, काल, संकल्प, प्रणव, अर्थ, धर्म, काम और मोक्ष – सभी सूर्य की उपासना कर रहे थे। वहां जाने पर ब्रह्माजी ने कश्यप और अदिति के क्लेश को बतलाया तथा सूर्य ने उनका क्लेश दूर करने के लिए स्वयं उनके पुत्र के रूप में प्रकट होने का वर दिया। तदनन्तर वे लोग अपने आश्रम में लौट आये। देवमाता अदिति ने 1000 (एक हजार) वर्ष तक

उन्हें गर्भ में धारण किया। तीनों लोकों का तेज ग्रहण कर वे आत्मरक्षा करते रहे और हजार वर्षों के बाद उत्पन्न होकर उन्होंने देवताओं की रक्षा की। उसी समय से आनन्दमय वातावरण के साथ ही 12 आदित्यों का जन्म हुआ।[9] सभी देवताओं ने आकर उनकी स्तुति की। इसके अनन्तर कश्यप ने सूर्य की आराधना कर उन्हें पुत्र रूप में प्राप्त किया था।[10]

सूर्य के कुटुम्ब का विवरण प्रस्तुत करने वाला ब्राह्मपर्वस्थ 76वां अध्याय सांबपुराण के भी छठे अध्याय में ज्यों का त्यों प्राप्त होता है। इसमें नारदजी के द्वारा सूर्यलोक में जाने तथा उनके परिकर, परिषद और परिवार के प्रतयक्ष देखने की बात आयी है। वहां सभी देवता, गन्धर्व, अप्सराएं, नाग, दक्ष, सूर्य के समक्ष नृत्य–गीत करते रहते हैं।[11] ऋषिगण सूर्य की निरन्तर स्तुति करते हैं। तीनों संख्याएं मूर्तिमान रूप में स्थित होकर वज्र और नाराच धारण किये गये सूर्य की स्तुति करती है। प्रातः सन्ध्या लालवर्ण का वस्त्र धारण कर पूर्व की ओर, चन्द्रवर्ण की मध्यान्हसंध्या उत्तर की ओर और तीसरी सांयकालीन सन्ध्या नीलवर्ण की पश्चिम की ओर खड़ी रहती है। इन्द्र भी जय–जय की ध्वनि करते हुए देवताओं के साथ वहां खड़े रहते हैं। इसी प्रकार गुरु, शुक्र, शिव आदि भी तीनों काल उनकी पूजा करते हैं।[12] प्रातःकाल में उनकी कमलासन पर मध्यान्ह में चक्राकार मण्डल बनाकर घृतार्चि रूप में, सांयकाल में गणों के साथ विपुलाज्य रूप में पूजा करनी चाहिये।[13] गरुड़ के छोट भाई अरुण अपने ललाट पर अर्द्धचन्द्राकार कमल धारण किये हुए अत्यन्त श्रद्धा–भक्ति से उनके सारथि का कार्य करते हैं। उनका रथ घड़ी, पल, ऋतु, वर्ष आदि काल के अवयवों के द्वारा निर्मित अत्यन्त दिव्य है।[14] उस रथ में छन्दोमय सात–घोड़े जुड़े हुए हैं। उनके दोनों पार्श्वों में निक्षुभा और राज्ञी नाम की सूर्य की दोनों पत्नियां रहती है। उनके साथ में 'पिङ्गल' नाम के लेखक और दूसरे 'दण्डनायक' नाम के द्वाररक्षक तथा दो कल्माषपक्षी दरवाजे पर खड़े रहते हैं। दिण्डि नाम के मुख्य सेवक उनके सामने खड़े रहते हैं। अन्य देवता उनके चारों ओर घेरकर खड़े रहते हैं और ग्रह भी वहां उनकी मूर्तिमान रूप से उपासना करते हैं।[15]

ब्राह्मपर्व के 77वें अध्याय के सूर्य का विराट् रूप संबंधी विवरण सांब–पुराण के 6/30–50 तक के श्लोकों में मिलता है। इसके मूल में सूर्य के निर्गुण–रूप का वर्णन है। पहले केवल सतत्व मात्र स्थित था। उससे अव्यक्त प्रकृति की उत्पत्ति हुई। उससे संकल्पात्मक–सृष्टि उत्पन्न हुई। उसी के त्रिगुणात्मक रूप से ब्रह्मा, विष्णु, शिव उत्पन्न हुए।[16] सूर्य ही प्रातःकाल ब्रह्मा के रूप में सृष्टि की उत्पत्ति, मध्यान्ह के रूप में उसका पालन और सांयकाल शिव के रूप में उसका अध्ययन करते हैं प्रजा का पालन करने से प्रजापति और पुरियों में शयन करने से पुरुष कहे गये हैं।[17] उनसे पहले कोई उत्पन्न नहीं हुआ था। इसलिये स्वयंभू कहे गये हैं। जल में शयन करने से नारायण कहे गये हैं। वे ही सहस्रशीर्षा और सहस्रबाहु के रूप में अन्धकार के परे आदित्यवर्ण पुराणपुरुष हिरण्यगर्भ हैं।[18]

नित्य और नैमित्तिक भेद से सूर्य की आराधना दो प्रकार से होती है। भविष्य–पुराण के 50, 51 और 52वें अध्यायों में माघशुक्ल सप्तमी के नैमित्तिकपूजा का उल्लेख है। यह सांवपुराण 20–21 अध्यायों में भी मिलता है। संक्षेप में सूर्य–पूजा की विधि यह है कि एक हाथ लम्बा–चौड़ा एक स्थण्डिल या वेदी का निर्माण करना चाहिये। उसी मण्डल में गणेश, विष्णु, सात्विकी, सत्यभामा, लक्ष्मी एवं शिव–पार्वती के साथ सूर्य का आवाहन एवं पूजन करना चाहिये। इसके बाद सात बार प्रदक्षिणा कर षाष्टांग–दण्डवत् प्रणाम करना चाहिये। फिर जैसा अपना मन या दोष–पाप हो – के अनुसार 100, 1000, 10,000 या एक लाख शुद्ध एवं संयत मन से जप करना चाहिये।[19] फिर अन्त में श्वास रोककर 100 रत्ती सोने की बनी हुई 'शतमान' नाम की सुवर्णमुद्रा ब्राह्मण को दक्षिणा देनी चाहिये।[20] यदि 10 हजार जप किया गया हो तो इसका दस गुना और एक लाख जप में उसका सौ गुना दान देना चाहिए। इससे सभी प्रकार के रोग, दोष और पाप नष्ट हो जाते हैं।[21]

कुलार्णवतन्त्र में पुष्प शब्द की सुन्दर निरुक्ति मिलती है। वहां पुण्य को बढ़ाने पापों को भगाने और श्रेष्ठ फल प्रदान

करने से इसका पुष्प नाम सार्थक माना गया है।[22] देवोपासना के समस्त उपकरणों में पुष्प को ही सर्वोत्तम–साधन बतलाया गया है। देवता लोग रत्न, सुवर्ण, द्रव्य, व्रत, तप आदि से उतना प्रसन्न नहीं होते, जितना एक पुष्प से प्रसन्न होते हैं।[23]

शारदातिलक में देवताओं के मस्तक को सदा पुष्पमण्डित रखने का निर्देश है।[24] महाभारत, आश्वमेधिकपर्व (104), वृद्धगौतम स्मृति (8), वृहन्नारदीयपुराण पूर्व–भाग (67), पद्मपुराण उत्तरखण्ड (89) आदि में पुष्पार्चनविधान सम्यक् प्रतिपादित है। तदनुसार विष्णुपूजन में मासभेद से अगणित पुष्पभेदों का निर्देश है। पद्मपुराण क्रियायोगसारखण्ड के 13वें अध्याय में कमलपुष्प की और महाभारत अश्वमेघपर्व तथा पद्मक्रियायोग अध्याय 10 में भी चम्पापुष्प की महिमायुक्त कथा प्रतिपादित है। इसके अतिरिक्त काशीखण्ड आदि में अहिंसा, सत्य आदि भावपुष्पों का भी विस्तार से निरूपण है।[25]

**निष्कर्ष –**

इस प्रकार भविष्यपुराण में भी इसी क्रम में 68वें अध्याय के 1 से 15 तक के श्लोकों में सूर्य के प्रिय–पुष्पों का निर्देश है। सूर्य के पुष्पों में मल्लिका, कमल, कुटज, मन्दार, अर्क, पलास आदि पुष्पों की विशेष महिमा है। इसमें बतलाया गया है कि सूर्यपूजा में मल्लिका (मालती) के अर्पण से प्राणी भोगवान् होता है और कमल के द्वारा सूर्य की पूजा करने से वह सर्वदा सौभाग्य का भाजन होता है।[26] कुटज[27] के पुष्प से परम एवं अविनाशी ऐश्वर्य की प्राप्ति होती है। मन्दार–पुष्प से सूर्य की पूजा करने से कुष्ठरोग नष्ट होता है और बिल्वपत्र से महालक्ष्मी की प्राप्ति होती है। अर्कपुष्प की माला द्वारा सूर्य की पूजा करने से सभी कामनाएं पूरी होती है। वकुल (मौलमरी, वज्रदन्ती) पुष्प की माला से पूजा करने पर सूर्य भगवान् प्रसन्न होकर रूपवती एवं गुणवती कन्या देते हैं। पलाशपुष्प के द्वारा पूजा करने से सूर्य उसे कभी पीड़ित नहीं करते। अगस्त्यपुष्प से पूजा करने पर वे सदा अनुकूल रहते हैं। कर–वीर (कनेर) से इनकी पूजा करने से प्राणी सूर्य का पार्षद बनता है और कुन्दूर के पुष्प से पूजा करने से साधक हंसविमान पर चढ़कर सूर्यलोक को प्राप्त करता है। कमल के सौ तथा हजार पुष्पों से पूजा करने के साधक पूषा (12 सूर्यों में से एक) के लोकों को प्राप्त करता है और बक पुष्प (अगस्त्यपुष्प का दूसरा भेद, लाल कनेर) से पूजा करने से साधक सूर्यलोक को प्राप्त होता है।[26] 19 से 22 तक श्लोकों में सूर्य के लिए सभी पुष्पों में करवीर (लाल कनेर) की विशेष महिमा निर्दिष्ट है। इससे प्राणी सभी कामनाओं से समृद्ध होकर सूर्यलोक को प्राप्त करता है। इससे बढ़कर सूर्य के लिये कोई भी तुष्टिकारक वस्तु नहीं है। इसलिये साधक करवीर (कनेर) पुष्प के द्वारा श्रद्धापूर्वक सूर्य की पूजा करते हैं जो इससे सूर्य की पूजा करता है, उसे संसार की कोई भी वस्तु दुर्लभ नहीं रहती।[27] किन्तु 28 से 30 तक के श्लोकों में सूर्यपूजा के पुष्पों में जातीपुष्प को श्रेष्ठ, लेपों में लालचन्दन को गन्धों में केशर को धूप में विजयधूप को और नैवेद्य में मोदक को श्रेष्ठ बताया गया है।[28]

***व्याख्याता**
**संस्कृत विभाग**
**राजकीय महाविद्यालय, गुडामालानी (बाड़मेर)**

**संदर्भ –**

1. व्यासादयो वनस्थाश्च भिक्षुः पंचशिखस्तथा।
सर्वे ते योगमास्थाय प्रविष्टाः सूर्यमण्डलम्।।
शुको व्यासात्मजः श्रीमान् योगधर्ममवाप्य तु।

आदित्यकिरणान् पीत्वा स पुनर्भवमाप्तवान्।। भविष्यपुराण, 1/66/50–60

2. शब्दमात्राः श्रुतिसुखा ब्रह्मविष्णुशिवादयः।
प्रत्यक्षोऽयं स्मृतो देव सूर्यस्तिमिरनाशनः।। वही, 1/66/61

3. भविष्यपुराण, 1/67/9–11

4. भविष्यपुराण 1/67/15, 6/2/14/9

5. भविष्यपुराण 1/67/17

6. भविष्यपुराण, 1/67/26

7. भविष्यपुराण, 1/67/28

8. भविष्यपुराण, 1/158/31–33

9. भविष्यपुराण, 1/159, 3

10. भविष्यपुराण, 1/159/25

11. भविष्यपुराण, 1/76/1–2

12. भविष्यपुराण, 1/76/7

13. भविष्यपुराण, 1/76/9 पू.

14. भविष्यपुराण, 1/76/10 उत्त.

15. भविष्यपुराण, 1/76/15 उत्त.

16. भविष्यपुराण, 1/77/8 उत्त.

17. भविष्यपुराण, 1/77/14

18. भविष्यपुराण, 1/77/21

19. भविष्यपुराण, 1/52/57

20. भविष्यपुराण, 1/52/58

21. भविष्यपुराण, 1/52/61 पू.

22. कुलार्णवतन्त्र, 17/58

23. वृहन्नारदीयपुराण, पूर्वभाग–67

24. पुण्याहवाचनप्रयोग

25. शारदातिलक, 4/105

26. काशीखण्ड–4
27. भविष्यपुराण, 1/68/6
28. मेघदूत (4) में मल्लिनाथ ने इसे गिरिमल्लिका कहा है। हिन्दी में इसे करची या कुरैया कहते हैं।
29. भविष्यपुराण, 1/68/14 उत्त.
30. भविष्यपुराण, 1/68/19–21
31. भविष्यपुराण, 1/68/29